46. भारत चीन सम्बन्ध वर्तमान परिप्रेक्ष्य में – एक विवेचन (डॉ. वसुधा आवले) 123
47. सशक्त महिला – समृद्ध भारत (डॉ. समीना खटक) 126
48. वर्तमान में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति – स्वास्थ्य एवं शिक्षा के सन्दर्भ में एक अध्ययन (डॉ. भावना ठाकुर) 129
49. भारतीय संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण में न्यायिक सक्रियता की भूमिका (डॉ. सुमन तनेजा) 132
50. भारतीय नारी – कल और आज (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन) (डॉ. प्रविता सिंह) 134
51. पंचायती राज सत्ता के विकेन्द्रीकरण का महायज्ञ (मध्यप्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन) (डॉ. मीनाक्षी पँवार) 136
52. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में नवीन आर्थिक उद्देश्य (डॉ. दिव्या शुक्ला) 38

(History / इतिहास)

53. The Growth of Education and Development of Educational Institutions in Ambala Division of Pre Independence Punjab (Dr. Jaswinder Kaur) 140
54. British Colonial Empire: Saga of expansion in Kalat Balochistan (Dr. Amita Sonker) 143
55. The Political study of Mughal Royal Ladies (Seema Jaiswal) 146
56. हिन्दू धर्म में शक्ति –पूजा (डॉ.जगमोहन सिंह पूषाम) 148
57. लोक कल्याणकारी शासक के रूप में अशोक महान् (नेहा चौहान) 151
58. सन् 1857 ई. के समर में धार के स्मारक और स्थल एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन (डॉ. आकाश ताहिर) 154
59. उत्तर वैदिक काल में सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था (सुमिता पाण्डेय) 157

(English Literature / अंग्रेजी साहित्य)

60. Role of Myths, History, Tradition in the plays of Tagore and Karnad (Dr. Manjari Agnihotri) 159
61. Girish Karnad - Naga - Mandala Talking Tales (Dr. Pankaja Acharya) 162
62 Humour and Pathos in *TristramShandy* by Laurence Sterne (Preeti Sharma) 165

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

62. उड़िया भाषा व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (डॉ. रमेश टण्डन) 167
63. प्राचीन एवं अर्वाचीन कहानियों में प्राणी जगत : एक अनुशीलन (डॉ. शोभना जोशी, कामना गुप्ता) 170
64. मानवीयतावाद और कामायनी (डॉ. गायत्री वाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार वाजपेयी) 173
65. परसाईजी और व्यंग्य विधा (डॉ सरोज जैन) 175
66. समकालीन उर्दू शायर डॉ. अख़्तर नज़्मी के 'दोहों' में सांस्कृतिक एकता (डॉ. रशीदा खान) 177
67. भारत में आदिवासी वर्ग चेतना – हिन्दी उपन्यास का संदर्भ (डॉ. रंजना मिश्रा) 179
68. आत्मीयता और मानवीय सम्बंध – अशोक वाजपेयी (डॉ. मनीषा मरकाम) 181
69. दलित साहित्य में चेतना का स्वरूप (डॉ. बिन्दु परस्ते) 183

Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal) (U.G.C. Jr. No. 64726)
ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Impact Factor - 4.710 (2016) October to December 2017, Vol. I

उड़िया भाषा व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

डॉ. रमेश टण्डन *

शोध सारांश – उड़िया साहित्य के इतिहास को हम मोटे तौर पर चार खण्डों में विभक्त करते हैं– 1. आदिकाल– सिद्ध साहित्य, बौद्ध गान ओ दोहा, चौतीशा साहित्य, सारला साहित्य, गोरखनाथ के भजन व कोइलि साहित्य। इस युग में हास्य, शृंगार के साथ–साथ तत्त्व ज्ञान व दार्शनिक चिंतन का पता चलता है। 2. पंचसखा युग– यह उत्कल के धर्म तथा साहित्य–जगत में एक समृद्धितम युग है। इस युग में पाँच भक्त कवि सिद्ध पुरूषों ने वैष्णव संत साहित्य की रचना करते हुए ज्ञान मिश्रित भक्ति की धारा बहाई है। 3. भंजयुग या उड़िया काव्य युग या रीति युग– काव्य युग के कवि मुख्यत: शृंगारधर्मी हुए एवं उड़िया रीति–साहित्य मुख्यत: संस्कृत साहित्य के आदर्श में अनुप्राणित हुआ है। 4. आधुनिक युग– इसमें विभिन्न विषयों को लेकर रचनाएँ लिखी गई।

प्रस्तावना – आदिकाल – सिद्ध साहित्य की सम्यक् आलोचना करने पर मालूम होता है कि कण्हुपाद, शबरपाद, लोहिपाद, राजा इन्द्रभूति, विरूप, आनन्दवरि, कम्बल, राहुलभद्र, असितधन, बुद्धश्रीज्ञान, अभयकर गुप्त, शमलवर्ण, निर्वाणश्री, शान्तिगुप्त, प्राज्ञ आदि प्रधान तान्त्रिक धर्मप्रचारक उड़िसा या उड़ियान पीठ के वासी थे। इनका समय 600 से 1000 ई0 है। सातवीं शताब्दी तक उड़ियान पीठ उड़िसा में तान्त्रिक पीठ के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। सिद्ध इन्द्रभूमि ने 'प्रज्ञोपाय विनिश्चय सिद्धि' ग्रन्थ में उड़ियान के देवता बुद्ध रूपी जगन्नाथ जी की भी स्तुति है।

धर्म और सामाजिक रीति–नीति की दृष्टि से 'बौद्ध गान ओ दोहा' या 'सिद्ध दोहा' की प्राचीन भाषा व भाषा–तत्त्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

'कलश चौतीसा', 'विपरीत चौतीसा' में शैव धर्म का परिचय मिलता है। इसमें वृद्ध रूप शिव जी के साथ पार्वती के परिणय संबंधी विचारों का हास्य रूप है। भाव और भाषा–सम्पदा से पूर्ण हजारों चौतिशाएँ आज भी उड़िसा के लोकमुख से आदर के साथ गायी जाती है। प्रेम, मिलन, विरह, करूण आत्मनिवेदन, भजन, नायक–नायिका का पत्र–विनिमय, ऋतु–वर्णन के साथ ही कठिन योग–तत्त्व व दार्शनिक चिंतन इसके मुख्य विषय हैं।

15वीं शदी के सूर्यवंशी राजा कपिलेन्द्र देव के राजकाल में शूद्रमुनि शारलादास द्वारा रचित 'सारला महाभारत' में कई जगह नाथ सम्प्रदाय का आभास मिलता है। सारलादास की मुख्य रचनाएँ– महाभारत, विलंका रामायण, चण्डी पुराण, लक्ष्मी नारायणी–वचनिका हैं। सारलादास जी उड़िया साहित्य व भाषा के वास्तविक जन्मदाता है। आप कटक जिले के निकटस्थ कनकावती नगरी के निवासी थे। सारलादास कृत 'महाभारत' प्राचीन उड़िया साहित्य का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। 15वीं सदी के सामाजिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का एक विशद् विवरण इस शारला महाभारत में देखने को मिलता है। महाभारत की सामरिक साज–सज्जा में उड़िया सैनिकों की वेशभूषा, विभिन्न मल्ल युद्ध, अश्व और पश्च सैन्य दलों के विराट समारोह, तत्कालीन विभिन्न अस्त्र–शस्त्रों के वर्णन आदि के द्वारा तत्कालीन उड़िसा का गौरवमय चित्र अंकित किया गया है। आपके द्वारा रचित अन्य मुख्य कृति 'चण्डी पुराण', कथावस्तु की दृष्टि से मार्कण्डेय पुराण के महिषासुर वध उपाख्यान पर आधारित है। सारला साहित्य की भाषा में ओजस्विता, सर्वार्थ प्रकाशक–शक्ति, उड़िया संस्कृति व सभ्यता का उच्च निदर्शन है।

उड़िसा में गोरखनाथ के गाए हुए अनेक भजन आज भी प्रचलित है। इसके अतिरिक्त 'सप्तांग योगधारण' नामक पुस्तक में गोरखनाथ जी के भजन का संग्रह किया गया है।

1466 से 1510 ई0 के मध्य रचित 'सोमनाथ कृतकथा' में बौद्ध धर्म का महत्त्व प्रकट हुआ है। इसी समय मार्कण्डदास लिखित 'केशाल कोइलि' (चौतीशा शैली में लिखित) में मातृ हृदय का वात्सल्य रस यशोदा के मुख से मुखरित हो उठा है। मार्कण्डदास की अन्य कृति 'महाकाष', तत्त्वज्ञान संबंधी उच्च कोटि का ग्रन्थ है। इसमें रामचन्द्र की महिमा के साथ–साथ ब्रह्मज्ञान की आलोचना की गई है।

भक्त कवि जगन्नाथ दास ने 'अर्थ कोइलि', भक्त कवि बलराम दास ने 'कान्त कोइलि', भक्त कवि नायिका ने 'ज्ञानोक्य कोइलि' का प्रणयन किया, जिसे प्राचीन उड़िया साहित्य में लोकप्रिय गीति कविता के रूप में विशेष ख्याति मिली।

1500 ई0 के आसपास, अर्जुनदास की 'रामविभा', 'गोपी चन्दन काव्य', गजपति कपिलेन्द्र की 'परशुराम विजय' (संस्कृत नाटिका), भक्त कवि नीलाम्बर दास की 'जैमिनी भारत', 'पद्म पुराण', 'रूद्र स्तुति', 'देउलतोत्वा' प्रधान हैं।

चैतन्यदास के काण्डिवृत में लिखित 'विष्णु गर्भ पुराण', नवाक्षरी वृत में लिखित 'निर्गुण महात्मय' दोनों तत्त्व मूलक ग्रन्थ हैं। बौद्ध सन्यासी वीरसिंह ने 'वीरसिंह चौतीशा' लिखी, जिसमें अवज्ञान से संबंधित तत्त्व विस्तारित रूप से लिपिबद्ध है।

पंचसखा युग – प्राचीन उड़िया साहित्य का पंचसखा युग, उत्कल के धर्म तथा साहित्य–जगत में एक समृद्धितम युग है। इस युग का साहित्य 'उड़िया सन्त साहित्य' के रूप में प्रसिद्ध है, जो मुख्यत: वैष्णव साहित्य है। इस युग में ज्ञान मिश्रित भक्ति की धारा बहती थी, जिसका मुख्य लक्ष्य अष्टांग तथा सप्तांग योग की सहायता से ब्रह्मदर्शन करना था। इस साहित्य में पूर्ववर्ती

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, खरसिया, जिला–रायगढ़ (छ.ग.) भारत

महायान के शून्यवाद की निर्गुण धारा का प्रमुख स्थान है। इसमें षट्चक्र तथा हठयोग के माध्यम से शून्य दर्शन करके साधक का जीवन मुक्ति लाभ करना परम कर्त्तव्य बताया गया है।

इस युग में 1. महापुरूष बलरामदास, 2. भक्तकवि जगन्नाथदास, 3. महायोगी अच्युतानन्द, 4. सिद्ध पुरूष यशवन्त, 5. सिद्ध पुरूष अनन्तदास के नाम अग्र पंक्तियों में उल्लेखनीय है।

महापुरूष बलरामदास – इनकी कृतियाँ हैं- वेदान्त सार, गुप्त गीता, ब्रह्माण्ड भूगोल, वीरसार गीता, अमरकोष गीता, जगमोहन रामायण, भाव समुद्र, पणसंचारी, कट अवकाश, कान्त कोइलि, कमल लोचन चौतिशा, लक्ष्मी पुराण। बलरामदास कृत रामायण से उड़ियावासी अन्य ग्रन्थों की तुलना में अधिक प्रभावित हुए हैं।

भक्तकवि जगन्नाथदास- इनकी कृतियाँ हैं- तुलाभिणा, ब्रह्मगीता, भागवत ग्रन्थ, गज स्तुति, उपाहरण, अर्थ कोइलि। इनका भागवत ग्रन्थ, उड़ीसा के घर-घर में 'भागवत आदि' के रूप में पूजित व गठित हो रहा है। यह उड़ियावासियों के लिए बाइबिल जैसा पवित्र ग्रन्थ है।

महायोगी अच्युतानन्द- इनकी कृतियाँ हैं- शून्य संहिता, गुरूभक्ति गीता, अणाकार संहिता व ब्रह्मशांकोलि, छाया, ज्योति और अवाड़ संहिता, हरिवंश, वृतिबाँध चौतिशा, गोपाल का शिष्य। इनके 'हरिवंश' में उत्कल के सामाजिक जीवन का चित्र प्रतिफलित हुआ है। यह दाण्डिवृत में लिखा गया है। इसमें कृष्ण-लीला प्रसंग है।

सिद्ध पुरूष यशवन्त – इनकी प्रमुख कृति है- प्रेमोक्त ब्रह्मगीता।

सिद्ध पुरूष अनन्तदास – इनकी प्रमुख कृति है- हेतुवध भागवत।

भंजयुग या उड़िया काव्य युग या रीति युग – 15वीं सदी में उड़िया काव्य का जन्म हो गया था, परन्तु उसकी पुष्टि सत्रहवीं सदी में हुई। भंजयुग के आलंकारिक काव्यों का आरम्भ बीधर दास के 'कांचनलता' काव्य से होता है। काव्य युग के कवि मुख्यत: श्रृंगारधर्मी हुए एवं उड़िया रीति-साहित्य मुख्यत: संस्कृत साहित्य के आदर्श में अनुप्राणित हुआ है। काव्य युग के **तीन प्रधान कवि** – 1. भक्त कवि दीन कृष्ण दास, 2. उपेन्द्र भंज एवं 3. भक्त कवि अभिमन्यु सामंत सिंहार हुए।

भक्त कवि दीन कृष्ण दास – इनकी प्रमुख रचनाएँ- रस कल्लोल, रस विनोद, जगमोहन, अमृतसागर बोलि, आरत बाण, राउतिआ आदि हैं। 'रस कल्लोल', 'क' अक्षर के नियम में लिखित कृष्ण भक्ति मूलक रसात्मक काव्य है, यह उड़िया काव्य जगत में विशेष लोकप्रिय है।

उपेन्द्र भंज- 'व' अक्षर को आरम्भ में रखकर महाकाव्य 'वैदेहिश विलास', 'स' अक्षर को आरम्भ में रखकर 'सुभद्रा परिणय', 'क' आद्य और 'क' आन्त्य के नियम में 'कला कौतुक' आदि ग्रन्थ उनके अगाध शब्द ज्ञान का परिचायक हैं। इनके आलंकारिक काव्यों को कोणार्क के सूर्य शिल्प के साथ तुलना की जाती है। ये संस्कृत के कवि श्रीहर्ष व कालिदास के साथ तुलनीय हैं। इनका काव्य समूह नायक-नायिका के मिलन-विरह जनित सुख से प्रत्येक उड़ियावासी के हृदय को स्पर्श करता है। समय-समय पर विरह-मिलन वर्णन में कवि ने अत्यधिक संभोग श्रृंगार रस की अवतारणा की, जो आलोचना का भी विषय है। इनकी अन्य रचनाएँ- लावण्यवती, प्रेमसुधानिधि, रसिक हारावली, सुवर्ण रेखा, कोटि ब्रह्माण्ड सुन्दरी आदि हैं। इनके काव्य को 3 प्रधान भागों में बांटते हैं- पौराणिक, काल्पनिक व आलंकारिक। आलंकारिक काव्यों में - चित्र काव्य बन्धोदय, अवनारस तरंग, यमक राज उचतिशा आदि प्रधान हैं।

भक्त कवि अभिमन्यु सामंत सिंहार – ये कवि मराठा और अंग्रेजों दोनों के शासनकाल में जीवित थे। इनका भक्तिरसात्मक काव्य 'विश्वनाथ चिंतामणी' उड़िया काव्य निधि की अतुलनीय सम्पदा है। यह श्रृंगार व वात्सल्य रस से परिपूर्ण है।

इस युग में 'पाला साहित्य' की सृष्टि भी हुई। गायक लोग इस तरह के साहित्य से जन साधारण को मुग्ध किया करते थे।

अन्य रचनाएँ-

कवि	रचनाएँ
भूपति पण्डित	प्रेम पंचामृत
त्रिविक्रम भंज	कनकलता
लोकनाथ	चित्रकला
ब्रज बंधु	रामलीला
विश्वनाथ खुटिया	विचित्र रामायण
ब्रजनाथ	समर तरंग
दीनबंधु	राधाकृष्ण लीलामृत
भक्त चरणदास	मथुरा मंगल, मन:शिक्षा
सदानन्द कविसूर्य	युगल रसामृत लहरी, युगल रसामृत झंकरी, प्रेम तरंगिणी

आधुनिक युग – 1803 में अंग्रेजों के उड़िसा पर अधिकार के बाद ही उड़िया साहित्य में इस युग का प्रादुर्भाव हुआ। उड़िया बाइबिल की छपाई सर्वप्रथम 1811 में तथा प्रथम उड़िया संवाद-पत्र 'उत्कल दीपिका' का अभ्युदय 1866 में कटक से हुआ। आधुनिक उड़िया साहित्य के प्रधान स्रष्टा हैं- 1. राधानाथ राय, 2. फकीर मोहन सेनापति और 3. मधुसूदन राव। इस युग के प्रमुख रचनाकार हैं-

साहित्यकार	रचनाएँ
राधानाथ राय	महायात्रा, चिलिका, नन्दिकेश्वरी, केदारगौरी, उषा।
रामशंकर राय	कांचिकावेरी, वनमाला, कलिकाल। आप उड़िया नाटक के सच्चे प्रतिष्ठाता हैं।
खड्गप्रसाद	पद्मावती हरण (संस्कृत नाटक पद्धति से लिखित)।
रघुनाथ परिजा	गोपिनाथ वल्लभ (संस्कृत नाटक पद्धति से लिखित)।
गोपिनाथ महान्ति	अमृत संतान।
कानुचरण महान्ति	का।
गोदावरीश मिश्र	धर्मशताब्दिर ओडिशा ओ तहिंरे मां स्थान।
गोदावरीश महापात्र	बंगा ओ सिंधा।
नीलकंठ दास	आत्म जीवनी।
बैकुंठनाथ पट्टनायक	उत्तरायण।
सच्चिदानन्द राउतराय	कविता- 1962
सूर्यनारायण दास	ओड़िया साहित्य परिचय।
सीताकान्त महापात्र	वर्षा की सुबह।

अन्य साहित्यकार के रूप में राधामोहन राजेन्द्र, पण्डित गोदावरीश, अविश्वनी कुमार घोष, कालीचरण पट्टनायक, गोपाल छोटराय, मनोरंजन दास, रामचन्द्र मिश्र, भंजकिशोर पट्टनायक, कार्तिक घोष, व्योमकेश त्रिपाठी, कुन्तला कुमारी, माधाधर, मानसिंह, राधामोहन गड़नायक, कुंजबिहारी दास, महापात्र नीलमणी साहु, नित्यानन्द महापात्र, डॉ० हरेकृष्ण महताब, सुरेन्द्र महान्ति, राजकिशोर राय आदि उल्लेखनीय हैं।

इस धुन में विभिन्न विषयों पर लेखनी चलाई गई है। 'वर्षा की सुबह' से एक उदाहरण प्रस्तुत है-

कुँवारी के मन में, तेरे सपनों के पत्तों के बीच।
यह जानते हुए भी कि खेल शुरू नहीं हुआ।
अस्थिर ट्रेन दौड़ती है पागलों-सी।
फर्क नहीं पड़ता मुझे कोई जय पराजय से।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. द्विवेदी, सालिगराम व जैन, प्रो० नीरज – भारतीय साहित्य, भार्गव प्रकाशन दतिया म०प्र० ।
2. महापात्र, सीताकान्त – वर्षा की सुबह ।
3. अध्ययन आधारित ज्ञान ।

****